

भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 06-10-2026

बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

इस वर्ष सितंबर माह में अच्छी वर्षा (209.2 मिमी, सामान्य से मात्र 3% कम) होने के बाद भी मानसून अवधि के दौरान राज्य में वर्षा की भारी कमी (सामान्य से 32% कम) देखी गई। इस दौरान केवल अरवल जिले को छोड़ कर (सामान्य से 4% अधिक वर्षा), राज्य के सभी 37 जिलों में सामान्य से कम वर्षा दर्ज की गई। राज्य में वर्षा में सर्वाधिक कमी शिवहर जिले में (सामान्य से 54% कम) दर्ज की गई। मानसूनोत्तर-ऋतु में, 1 अक्टूबर से अब तक राज्य में मात्र 0.3 मिमी वर्षा दर्ज की गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), पटना केंद्र के अनुसार, आने वाले 5 दिनों में राज्य के अधिकतम और न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। इस सप्ताह, 7 से 10 अक्टूबर के दौरान राज्य में कुछ स्थानों पर हल्के स्तर की वर्षा (2.5 से 15.5 मिमी तक) एवं मेघ गर्जन / वज्रपात के साथ तेज हवा (गति 40-50 कि.मी./घंटा) के चलने की संभावना है, तत्पश्चात सप्ताह के अंतिम दिनों में मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना है। इस स्थिति में, खरीफ की फसलों और पशुधन को होने वाले संभावित नुकसान से बचाने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- इस समय अधिकांश जगहों पर धान की फसल प्रजनन वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण जैसे- बाली बनना/ निकालना और फूल आना/ पुष्पन (सबसे संवेदनशील चरण) पर है, इस अवस्था में फसल की एक सिंचाई अवश्य करें।
- खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गीला और सूखा' (AWD) सिंचाई पद्धति को अपनाएँ।
- सिंचाई के लिए जल संचयन संरचनाओं जैसे तालाब, रिचार्ज पिट आदि में संग्रहित किए गए जल का उपयोग करें।
- धान की फसल में वृद्धि के इन महत्वपूर्ण चरणों पर पानी की कमी के कारण आने वाले तनाव (जैसे सूखा/पोषण की कमी) से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% (20 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम क्लोराइड / 0.5%-1% (5-10 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम नाइट्रेट के घोल का छिड़काव करें।
- बारिश या सिंचाई के बाद ही फसलों को पोषक तत्व दें और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने पर 0.5% (5 ग्राम प्रति लीटर पानी) जिंक सल्फेट का छिड़काव करें।
- संभावित सूखे की स्थिति में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें। रोग-ग्रस्त पौधों को हटाएं और आवश्यकता पड़ने पर गंभीर स्थितियों में ही अनुमोदित दवा की अनुशंसित मात्रा का प्रयोग करें। कीट प्रबंधन के लिए खेतों में फेरोमोन और स्टिकी ट्रैप लगाएं।

- सब्जी-वर्गीय फसलों में मल्लिचिंग (पलवार) का प्रयोग करें, इससे कम बारिश की स्थिति में खेत में उचित नमी बनाये रखने में मदद होती है।
- सरसों की समय से बुवाई के लिए (उचित समय- 15 अक्टूबर से 15 नवंबर), पूसा सरसों- 28, पूसा सरसों- 30, पूसा केसरी-5111 किस्म का चयन कर सकते हैं। इसके लिए मिट्टी में उचित नमी होने पर समय पर खेत की तैयारी कर लें, संतुलित उर्वरक का प्रयोग करें, उचित बीज दर एवं कतार दूरी अपनाएं।
- पशुओं के लिए हर समय स्वच्छ एवं पर्याप्त मात्रा में पेयजल की उपलब्धता बनाए रखें।